प्रातःक्लास 6/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। यह तो ज़रूर बच्चे समझते हैं कि हम ब्राह्मण देवता बन जावेंगे। यह तो पक्का निश्चय है ना। जिसको टीचर पढ़ाते हैं ज़रूर आप समान बनाते हैं। यह तो ..... की बात है ना। कल्प–2 बाप आकर समझाते हैं, हम नर्कवासियों को आकर स्वर्ग़वासी बनाते हैं। सारी दुनियाँ को बनाने वाला कोई तो होगा ना। बाप स्वर्ग़वासी बनाते हैं, रावण नर्कवासी बनाते हैं। इस समय (है) रावण का राज्य और सतयुग में है रामराज्य। रामराज्य की स्थापना करने वाला है तो ज़रूर रावण राज्य का(ी) भी स्थापना करने वाला होगा ना। राम, भगवान को कहा जाता है। भगवान नई दुनियाँ की स्थापना करते हैं। ..... तो बहुत सहज है। कोई बड़ी बात नहीं; परन्तु पत्थर बुद्धि ऐसे हैं जो पारस बनना ही असम्भव। नर्कवासी से स्वर्ग़वासी बनने में बड़ी मेहनत लगती है; क्योंकि माया का प्रभाव है। कितने बड़े–2 मकान 50 मारी, ... मारी की बनाते हैं। स्वर्ग़ में कोई इतनी मारी आदि बनते ही नहीं। आजकल यह बनाते रहते हैं बड़ी–2 (म)कानें। तो मनुष्य समझते हैं सतयुग में भी ऐसे मकान नहीं होते जैसे हम यहाँ बनाते हैं। बाप खुद (स)मझाते हैं, इतने झाड़ सारे विश्व पर होता है तो वहाँ माड़ियाँ आदि बनाने की कोई दरकार ही नहीं। (ढे)र के ढेर ज़मीन पड़ी रहती है। यहाँ तो ज़मीन है नहीं; इसलिए ज़मीन का कितना दाम बढ़ गया है। वहाँ तो (ज़)मीन का भाव लगता ही नहीं। म्युनिसपल टेक्स आदि लगता है। जिसको जितनी ज़मीन चाहिए ले सकते हैं। .....हाँ तुमको सभी सुख मिल जाते हैं। सिर्फ़ बाप की इस नॉलेज से। मनुष्य 100 माड़ियाँ आदि बनाते हैं उसमें भी (पै)सा तो लगता है ना। वहाँ पे किसपर लगता ही नहीं। अथाह धन रहता है। पैसे का क़दर नहीं। ढेर पैसे होंगे ..... क्या करेंगे। सोने की, हीरों की, मोतियों की महल बनाते हैं। अभी तुम बच्चों को कितनी समझ मिली है। समझ (और) बेसमझ की ही बात है। सतो और तमोप्रधान बुद्धि। सतोप्रधान बुद्धि स्वर्ग़ के मालिक तमोप्रधान बुद्धि (नर्क) के मालिक। यह तो स्वर्ग़ नहीं है। यह है रौरव नर्क। बहत दुःखी हैं; इसलिए सभी पुकारते हैं भगवान को। (पु)कारते भी हैं फिर भूल भी जाते हैं। कितना माथा मारते , कॉनफ्रेंस आदि करते रहते हैं कि एकता हो; परन्तु (तुम) बच्चे समझते हो फूट वाले तो आपस में मिल न सकें। यह सारा झाड़ जड़–जड़ीभूत है। फिर नया बनना है। (तु)म जानते हो कलयुग से सतयुग कैसे बनता है। यह नॉलेज अभी तुमको बाप समझाते हैं। सतयुग वाले सो फिर (कि)लयुग वाले बनते हैं। तुम फिर संगमयुग वासी बन सतयुग वासी बनते हो। कहेंगे इतने सभी सतयुग में .....वेंगे? नहीं। जो बच्चे सत्य ना॰ की कथा सुनेंगे वही स्वर्ग़ में जावेंगे। बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। दुःख(धा)म तो होगा ही नहीं। तो इस दुःखधाम को जीते जी तलाक़ दे देना चाहिए। बाप युक्ति तो बतलाते हैं ..... तुम तलाक दे सकते हो। इस सारी सृष्टि पर इन देवी–देवताओं का राज्य था। अभी फिर बाप आए (हैं) स्थापना करने। हम उस बाप से विश्व का राज्य ले रहे हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार चेंज ज़रूर होनी है। पुरानी (दु)नियाँ का विनाश नई दुनियाँ की स्थापना। यह तो होता ही है। यह है ही पुरानी दुनियाँ। इनको कलयुग कहेंगे। (मनुष्य ऐसे पत्थर) बुद्धि हैं जो बिल्कुल समझते ही नहीं कि सतयुग क्या होता है। कलहयुग क्या होता है। अगर ..... तो रवाना कर देना चाहिए। टाइम वेस्ट न करना चाहिए। बाबा ने समझाया है इस नॉलेज को लेने लायक (व)ही हैं जिन्होंने बहुत भक्ति की है। उनको ही उठाया चाहिए। बाकी जो इस कुल के होंगे ही नहीं वह (समझें)गे ही नहीं। जैसे कल एक बच्ची ने एक से बैठ माथा मारा। उसने समझा कुछ भी नहीं। अंत में कहा मैं (कुछ) भी समझने वाला नहीं हूँ। तो फिर ऐसे टाइम वेस्ट क्यों करना चाहिए। हमारे घराणें का ही नहीं है तो समझेंगे भी नहीं। बोला आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है यह मैं समझ ही नहीं सकता हूँ। तो ऐसे साथ मेहनत क्यों करनी चाहिए, जिसकी बाबा की मना है। और ब्रह्मा के लिए भी अक्सर पूछते हैं; इसलिए बाबा ने ..... हर चित्र के ऊपर में लिख दो भगवानुवाचः। मैं आता ही कल्प–2 के पुरुषोत्तम संगमयुग पर हूँ और (साधारण) मनुष्य तन में। जो अपने जन्मों को नहीं जानते हैं। मैं बतलाता हूँ। पूरे 5000 वर्ष आयु (अर्थात् पार्ट)

(ि)कसके होते हैं हम बता देते हैं। जो पहले नम्बर में आए हैं उनका ही पार्ट होगा ना। श्री कृष्ण की महिमा ..... गाते हैं। फर्स्ट प्रिंस ऑफ सतयुग। वही फिर 84 जन्मों बाद क्या होगा? फर्स्ट बेगर। बेगर टू प्रिंस। फिर प्रिंस (टू) बेगर। तुम समझते हो प्रिंस टू बेगर कैसे बनते हैं। फिर बाप आकर कौड़ी से हीरे जैसा बनाते हैं। जो (ही)रे जैसा है वही फिर कौड़ी जैसे बनते हैं। पुनर्जन्म तो लेते हैं ना। सबसे बहुत जन्म कौन लेते हैं? सबसे बहुत जन्म कौन लेते हैं। यह तुम समझते हो। पहले–2 तो श्रीकृष्ण को ही मानेंगे। उनकी राजधानी है। बहुत जन्म भी उनके होंगे। यह तो बहुत सहज बात है; परंतु मनुष्य पत्थर बुद्धि होने कारण इन बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। बाप समझाते हैं तो वण्डर खाते हैं। बाप बिल्कुल ठीक बताते हैं, फर्स्ट सो लास्ट। फर्स्ट हीरे जैसा, लास्ट कौड़ी जैसा। फिर हीरे जैसा बनना है। पावन बनना है। इसमें तकलीफ क्या है। सिर्फ़ लौकिक बाप का जो विख का वर्सा मिलता है वह छूटता है। पारलौकिक बाप उनके लिए ऑर्डीनेन्स निकालते हैं, काम महाशत्रु है। तुम पतित किससे बने हो? विकार में जाने से। इसलिए बुलाते भी हैं पतित–पावन आओ; क्योंकि बाप तो एवर पारस बुद्धि है। वह कब पत्थर बुद्धि नहीं बनते हैं। कनेक्श ही उनका और पहले जन्म वाले का हुआ। देवताओं(एँ) तो बहुत होते हैं। डीटीज्म है ना; परंतु बुद्धि कुछ भी समझते नहीं। तमोप्रधान बुद्धि मनुष्य हैं ना। क्रिश्चयन लोग कहते हैं क्राइस्ट से 3000 वर्ष पहले पैराडाइज़ था। वह फिर भी पिछाड़ी को आए हैं ना। तो उनकी ताकत है। उनसे ही सब सीखने जाते हैं; क्योंकि उन्हों की फ्रेश, ताज़ी बुद्धि है। बृधि (वृद्धि) भी उन्हों की है। सतो, रज(ो), तमो में आते हैं ना। तुम देखते हो सब कुछ विलायत से ही सीखते हैं। यह भी तुम जानते हो सतयुग में मलि आदि ..... बनने में कोई टाइम नहीं लगेगा। एक की बुद्धि में आया तो फिर वृद्धि होती जाती है। एक माकन(मकान) बना तो फिर अनेकानेक बनते जाते हैं। बुद्धि आ जाता है ना। साइंस वालों की बुद्धि तुम्हारे ऊँच हो जाती है। झट महल बनाते रहेंगे। यहाँ मकान आदि बनाने में 12 मास लग जाते हैं। वहाँ तो इंजीनियर आदि होशियार होते हैं। वह है ही गोल्डेन एज्ड। पत्थर आदि तो होंगे ही नहीं। अभी तुम बैठे हो ख़्याल करते होंगे हम यह पुराना शरीर छोड़ेंगे फिर अपने घर में जावेंगे। वहाँ से फिर सतयुग में योग से जन्म लेंगे। बच्चों को खुशी नहीं होती? चिंतन नहीं चलता? जो मोस्ट सर्विसएबुल बच्चे हैं उन्हों का ही चिंतन चलता होगा। जैसे बैरीस्टरी पास करते हैं तो बुद्धि में चलता है ना हम यह करेंगे यह करेंगे। तुम भी समझते (हो) हम शरीर छोड़ जाकर यह बनेंगे। याद से ही तुम्हारी आयु वृद्धि को पावेगी। अभी तो बेहद के बाप के बच्चे हो। यह ग्रेड बहुत ही ऊँची है। तुम ईश्वरीय परिवार के हो। उनका और कोई भी सम्बंध नहीं है। बहन–भ(ाई) से भी ऊँच चढ़ाई दिया है। भाई–2 समझो। यह बहुत ही प्रैक्टिस करनी पड़ती है। तुम्हारे भाई का निवास क(हाँ) है इस तख़्त पर अकाल आत्मा रहती है। यह तख़्त सभी आत्माओं की सड़ गई है। सबसे जास्ती तुम्हारा तख़्त सड़ा है। आत्मा इस तख़्त में विराजमान होती है। भृकुटि के बीच में क्या है? अभी तुम समझते हो यह बुद्धि (से) समझने की बातें हैं। आत्मा बिल्कुल ही सूक्ष्म है। स्टार मिसल है। बाप भी कहते हैं मैं भी बिन्दी हूँ। मैं सूक्ष्म से बड़ा थोड़े ही हूँ। आत्मा एक ही है। जहाँ घर में तुम आत्माएँ रहते हो वहाँ मैं भी रहता हूँ। तु(म) जानते हो हम शिवबाबा के संतान हैं। अभी बाप से वर्सा लेना है; इसलिए अपन को भाई–2 समझो। बा(प) को... सम्मुख पढ़ा रहे हैं। कल्प–2 ऐसे ही सम्मुख आकर पढ़ाते हैं। विघ्न भी कितने सहन पड़ते हैं। कि(तनी) बांधेलियाँ हैं। आगे चलकर और ही कशिश होते जावेंगे। यह विघ्न भी ड्रामा अनुसार पड़ती है। यह द्रौपदी और दुःशासन की दुनियाँ है ना। आधा कल्प की हेर पड़ी हुई है नंगन होने की। अभी बाप कहते (हैं), तुमको नंगन नहीं होना है। यह ऑर्डीनेन्स है। अभी तो और ही तमोप्रधान बन पड़े हैं। विख बिगर रह न(हीं) सकते हैं। गवर्मेन्ट कहती है शराब न पियो। फिर उनको शराब पिलाये, डायरैक्शन देते हैं बम्स(बॉम्ब्स) सहित ..... कितना नुकसान होता है। तुम यहाँ बैठे–2 विश्व का मालिक बनते हैं। वह फिर वहाँ बैई बम्स(बॉम्ब्स) छोड़ते हैं।

..... का विनाश के लिए। कैसी चटाबेटी है। तुम यहाँ बैठे–2 बाप को याद करते हो और विश्व का मालिक (बनते) हो। कैसे भी करके बाप को याद ज़रूर करना है। इसमें हठयोग आदि करने, आसन आदि लगाने की भी (बात) नहीं। बाबा कोई तकलीफ नहीं देते हैं। कैसे भी बैठो सिर्फ़ याद करो। तुम मोस्ट बिलवेड बच्चे हो। तुमको (बाद)शाही ऐसे मिलती है जैसे मक्खन से बाल। गाते भी हैं सेकण्ड में जीवनमुक्ति। कहाँ भी बैठो, घूमो–फिरो ..... को याद करो। पवित्र होने बिगर जावेंगे कैसे। नहीं तो सज़ा खानी पड़ेगी। लेखा सभी का उतरेगा जब धर्मराज ..... जावेंगे। सभी का हिसाब चुक्तू होना है। फिर मोचरा भी खावेंगे मानी भी टूकड़ मिलेगा। जितना पवित्र (रहें)गे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। अपवित्र रहेंगे तो सूखा हुआ रोटी खावेंगे। जितना बाप को याद करेंगे उतना (पाप) कटेंगे। इसमें खर्चा आदि की कोई बात नहीं। भल घर में बैठे रहो, बाप से यह मंत्र लो। यह है माया को (वश) करने का मंत्र। मनमनाभव। यह मंत्र मिला फिर भल घर जाओ। मुख से भी कुछ बोला(ो) नहीं। अलफ़ और बे। (बा)दशाही को याद करो। तुम समझते हो बाप को याद करने से हम सतोप्रधान बन जावेंगे। पाप कट जावेंगे। (बा)बा अपना अनुभव भी सुनाते हैं। भोजन पर बैठता हूँ अच्छा हम बाबा को याद कर खाते हैं। फिर झट भूल जाता (हूँ) ; क्योंकि गाया जाता है जिनके माथे मामला..... बाबा के पास तो बहुत ही समाचार आते हैं। कितना ख़्याल (क)रना पड़ता है। फलाने की आत्मा बहुत ही सर्विस करती है। उनको ही याद करना है। सर्विसएबुल बच्चों को (बा)प बहुत ही प्यार करते हैं। तुमको भी कहते हैं, इस शरीर में जो भी आत्मा विराजमान है उनको याद करो। (य)हाँ तुम आते ही हो शिवबाबा के पास। बाप वहाँ से नीचे आए हैं। तुम सभी को कहते हो भगवान आया है; परंतु पत्थर बुद्धि ऐसे समझेंगे नहीं। युक्ति से बताना पड़े। हद का और बेहद का दो बाप है। अभी बेहद का बाप राजाई दे रहे हैं। पुरानी दुनियाँ का विनाश भी सामने खड़ा है। एक धर्म की स्थापना, अनेक धर्मों का विनाश बाप करा रहे हैं। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पप भस्म होंगे। यह योग अग्नि है। जिससे तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। यह तरीका बाप ने ही बताया है। बाकी तो शास्त्र आदि सभी हैं भक्ति मार्ग के। यह कोई भी नहीं जानते। ज्ञान से सतयुग–त्रेता दिन, भक्ति से रात होता है। अभी तो घोर अंधियारा। भक्ति से सीढ़ी उतरते जाते हैं। एक भी कोई वापस गया नहीं है। यह तो गपोड़ा मारते रहते हैं, फलाना स्वर्ग गया। ज्योति ज्योत समाया। सद्गति देने वाला तो एक भी गुरु है नहीं। सद्गति देने वाला है एक। बाकी दुगर्ति के लिए अनेक हैं। कितने तुम्हारे गुरु हैं। फिर एक गुरु छोड़ दूसरा करते, तीसरा करते हैं। मिलता कुछ भी नहीं है। तुम बच्चे जानते हो, बाप सभी को गुल–2 बनाकर, नयनों पर बिठाकर ले जाते हैं। कौन–सी नयन? ज्ञान की। आत्माओ को ले जाते हैं। समझते हो जाना तो ज़रूर है। उनसे पहले क्यों नहीं बाप से वर्सा लेवें। कमाई भी बहुत भारी है। बाप को भूलने से फिर घाटा भी बहुत है। पक्के व्यापारी बनो। बाप को याद करने से ही आत्मा पवित्र बनेगी। तो बाप कहते हैं, मीठे–2 बच्चों देही–अभिमानी बनो। यह टेव पक्की डालनी पड़े। अपन को आत्मा समझ बाप से पढ़ते रहो। तो बेड़ा पार हो जावेगा। वैश्यालय से शिववालय में चले जावेंगे। चन्द्रकां(त)–वेदांत में भी यह कथा है। बोट कैसे चलती है फिर बीच में उरते हैं। कोई चीज़ में दिल लग जाती है स्टीमर चला जाता है। ..... यह सभी बातें शास्त्रों में लिखी हुई हैं। यह भक्ति मार्ग के शास्त्र फिर भी बनेंगे। तुम पढ़ेंगे। फिर जब बाबा आवेंगे तो यह सब छोड़ देंगे। बाप आते ही हैं सबको ले जाने। 84 का चक्र भी तो ..... लिया है। बिल्कुल सहज बात है। भारत का उत्थान और पतन कैसे होता है। कितना क्लीयर है। यह वह बनते हैं वह यह बनते हैं। तुम क्लीयर लिख दो। यही सांवरा वही फिर गोरा बनता है। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा। एक तो सिर्फ़ नहीं बनता है ना। यह सारी समझानी है। गोरा और सांवरा। स्वर्ग़ में जाते हैं तो नर्क को लात मारते हैं। चित्र में क्लीयर है ना। तुम सभी का ऐसे चित्र बनावें? राजाई के चित्र तुम्हारी बनाई; परंतु बड़ी लॉटरी मिलने से चर्ये बन पड़े तो छोड़ दिया। अच्छा, मीठे–2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।